सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - राधे (द्वितीय)

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

कौन है कृष्ण?

कृष्ण से कैसा प्यार!

राधा राधा क्यूँ करे?

कैसी है प्रीत की रसधार!

प्रीत जाननी है

या

प्रीत समझनी है

प्रीत करनी है

या

प्रीत पहचाननी है

प्रीत पा नी है

या

प्रीत लूटानी है

कहो

"Vibrant Pushti"

फूल उगाया

झरना फूटाया

बूँद बरसाया

सप्तरंग झगमगाया

साँस थमाया

होठ थरथराया

नैन अपलकाया

दिल थडकाया

क्यूँ

प्रीतरीत में खुद को लुटाया

"Vibrant Pushti"

क्यूँ मुझे याद करे

क्या हूँ मैं एक तराना

क्यूँ मुझे प्यार करे

क्या हूँ मैं एक दीवाना

क्यूँ मुझे एकरार करे

क्या हूँ मैं एक सजना

क्यूँ मुझे शृंगार करे

क्या हूँ मैं एक बसाना

क्यूँ मुझे नफरत करे

क्या हूँ मैं एक फसाना

सच कान्हा!

मैं क्या हूँ वह नहीं मैंने जाना

तो तु कैसे मुझे पहचाना

हूँ स्वार्थ की राहो में

हूँ विश्वासघात की बाहों में

हूँ कपट की चाहो में

हूँ माया की आहो में

हे कान्हा!

"Vibrant Pushti"

" जय श्री कृष्ण "

हे कान्हा!

क्या कहूँ!

तेरे बिन ओ..... तेरे बिन

नैन प्यासे

कैसे खुले पलके कैसे झुके पलके

नैन को भाये तेरे नैन

बूँद बूँद पुकारे आजा मेरे द्वारे

तेरे बिन ओ..... तेरे बिन

अकेले अकेले तडप रहे तन मन

तन को भाये तेरा मन

रोम रोम तरसे प्रीत का स्पर्श

तेरे बिन ओ..... तेरे बिन

रात जागे पल पल दिन दौडे पल पल

हर पल को भाये तेरा स्मरण

कैसे काटु जीवन की पल

तेरे बिन ओ..... तेरे बिन

" Vibrant Pushti "

खुद को छूपाने पलक रचाई

खुद को बरसने आँसू बहाये

खुद को पीने अधर रस जगाये

खुद को गूँजने धडकन बजाई

खुद को बसाने दिल प्रकटाया

खुद को तरसने प्रीत घडाई

खुद को महकने साँस लहराई

ऐसी लीला है मेरे प्रियतम!

जो पल पल जीवन जन्माये

हे राधा!

हे श्यामा!

हे कान्हा!

हे साँवरा!

"Vibrant Pushti"

तेरे नैनों के सामने नैना मिलाऊँगा

तेरे होठों के सामने होठ मिलाऊँगा

तेरे मन के सामने मन मिलाऊँगा

तेरे दिल के सामने दिल मिलाऊँगा

तेरे सूर के सामने सूर मिलाऊँगा

तेरे हस्त के सामने हस्त मिलाऊँगा

तेरे मुखडे के सामने मुखडा सजाऊँगा

तेरे तन के सामने तन सजाऊँगा

तेरे धडकन के सामने धडकन सुनाऊँगा

तेरे गूँजन के सामने गूँजन सुनाऊँगा

तेरे सर के सामने सर झुकाऊँगा

तेरे पलकों के सामने पलक झुकाऊँगा

तेरी प्रीत के सामने प्रीत लूटाऊँगा

तेरी साँसों के सामने साँस लूटाऊँगा

तेरे जीवन के सामने जीवन सँवारुँगा

तेरे आँचल के सामने आँचल सँवारुँगा

कहो अब कान्हा!

अब तुम क्या क्या हमसे करवाएगा?

न हम तुम्हें छोडेंगे

न तुम हमें ठुकराओगे

ऐसी है यह रीत हमारी

जो क्षण क्षण तुम पर न्योछावरेगी।

"Vibrant Pushti"
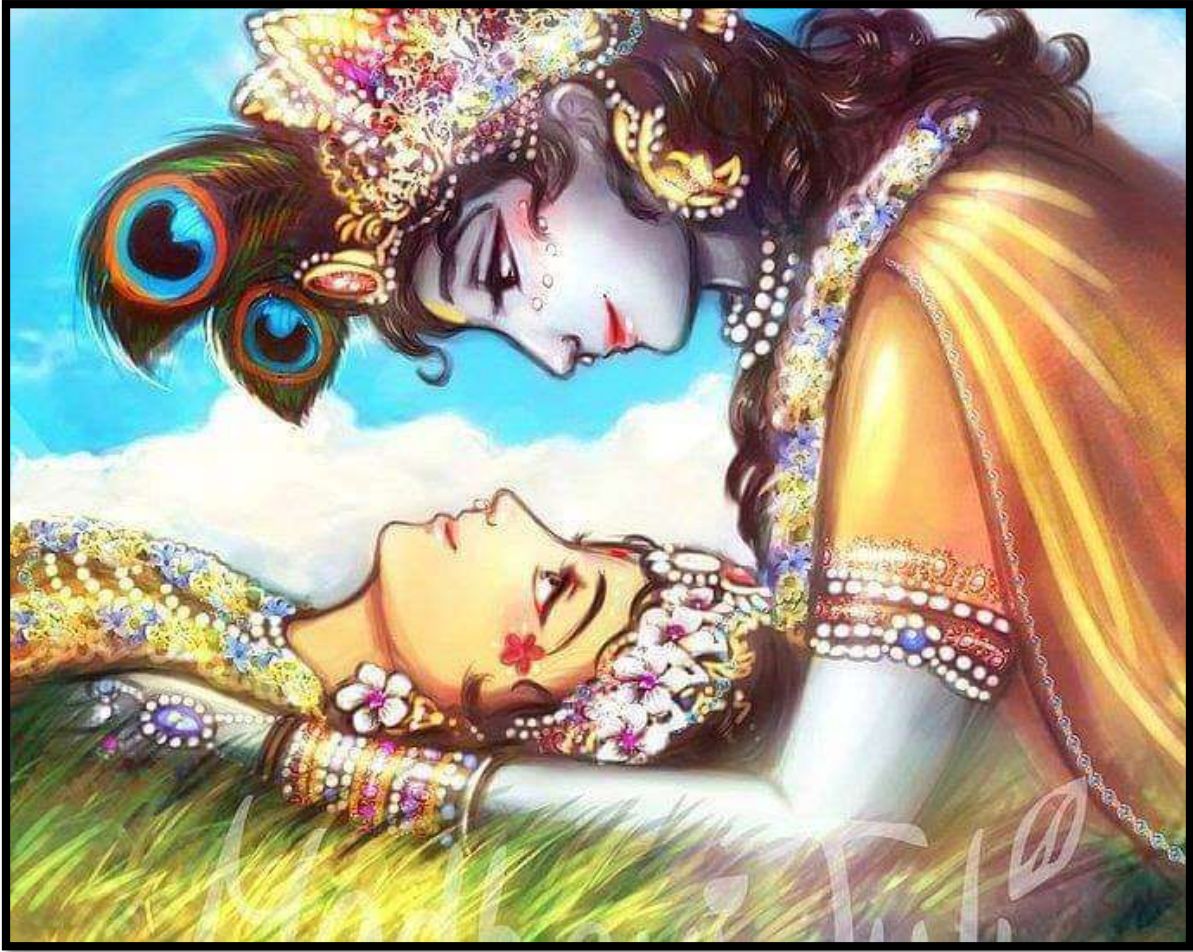
हे प्यारी ! हे न्यारी ! हे दुलारी ! हे साँवरी !

एक काला चित चुराने वाला

चोरी चोरी मेरी चुनरी चोरी गयो री

नैनन की काजल चुरा गयो

अधर की लाली चुरा गयो

मन की मचलता चुरा गयो

तन की तरलता चुरा गयो

क्या क्या छुपाऊँ कहाँ

नजर से लपकाऊँ कहाँ

चोरी चोरी चोर गयो रे

छुप छुप छुपी गयो रे

एक काला चित चुराने वाला

आँचल ओढ़ू जुल्फें बिछाऊँ

पलकें झुकाऊँ अधर बिडाऊँ

चूडियाँ गंठाऊँ पायल बंधाऊँ

कुंडल ठहराऊँ कंगन चिपकाऊँ

कहीं कहीं से भी सूर जगाये रे

कहीं कहीं से भी नाच नचाये रे

एक काला चित चुराने वाला

कहाँ कहाँ से ढूँढे रे

कैसे कैसे रीत से लूटें रे

"Vibrant Pushti"

ओ काला ! ओ कान्हा ! ओ कन्हैया ! ओ कृष्ण ! ओ केशव !

हे प्रीत! तुझे पूजा है

यही मेरा सेवा है

यही मेरी शरणागत है

यही मेरा प्रणाम है

यही मेरा अस्तित्व है

यही केवल मेरा आचरण है

यही केवल हमारा श्वास है

यही केवल हमारी ज्योति है

"Vibrant Pushti"
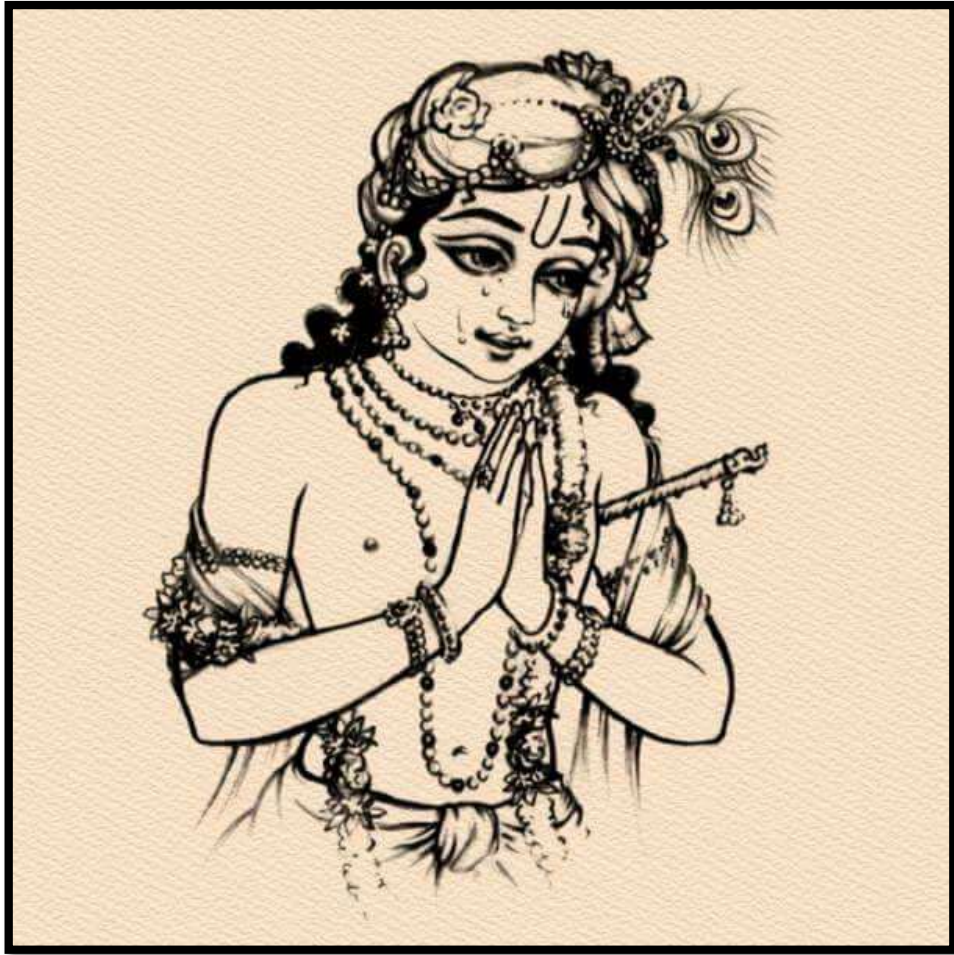
राधिका तमने श्याम शोधे गोकुल नी गलियों मां

श्याम शोधे श्याम शोधे

श्याम दोडे श्याम दोडे

राधिका तमने श्याम शोधे

गोकुल नी गलियों मां

यमुना तीर दोडे शोधे निकुंज मां

गोवर्धन तलेटी दोडे शोधे कंदरा मां

राधिका तमने श्याम शोधे

गोकुल नी गलियों मां

बंसरी तान छेडे गाये गीत मधुरा

सखीओं कहेण छोडे करे अडपला अधुरा

राधिका तमने श्याम शोधे

गोकुल नी गलियों मां

नटखट प्रीत लीला रचे तरसे मधुवन मां

नटखट विरह रीत सजे तडपे निधिवन मां

राधिका तमने श्याम शोधे

गोकुल नी गलियों मां

"Vibrant Pushti"

सच में यह जीवन है जिज्ञासा का भंडार

जो कौन कौन क्या क्या पहचाने

सच में यह नैनन है तस्वीरों का दर्पण

जो कौन कौन कौनसी तस्वीर दिखायें

सच में यह होठों है सूरो का आँचल

जो कौन कौन कौनसा राग सुहायें

सच में यह तन है क्रिया का सर्जन

जो कौन कौन क्या क्या कर्म करायें

सच में यह मन है तरंगों का नर्तन

जो कौन कौन क्या क्या रंग बिखरायें

सच में यह धन है रखने का सुखम्

जो कौन कौन क्या क्या खेल खिलायें

सच में यह प्रीत है रीतों का अर्पण

जो कौन कौन क्या क्या आनंद लूटायें

सच में आप है मेरे जगत का साथी

जो कौन कौन कौनसा साथ निभायें

"Vibrant Pushti"

प्रीत की रीत अष्ट है

और जो अष्ट रीत में माहिर है

उन्हें अष्टि कहते है।

अष्टि केवल कान्हा है

जो हर प्रीत लीला में निपुण है।

अष्ट रीत समझनी है.....

ओहहह!

पहले यह कहो

सेवा में तुम्हें कुछ होता है?

एक सच कहे- इसमें न अहंता और ममता नहीं है पर विशुद्धता है।

जो तुमसे रचायी हुई, जतायी हूई सेवा - दर्शन प्रीत से सभर है, न्योछावर है, समर्पित है, शरणागत है।

"Vibrant Pushti"

ऐसी कैसी खता करु की मैं तेरी हो जाऊँ

हर खता से मैं जी रही हूँ

मुझे खता करना ही आता है।

यह नैनन ने देखा

यह कर्णों ने सुना

यह होठों ने पुकारा

यह हाथों ने पूजा

यह पैरों ने दौडा

यह मन ने मचला

यह तन ने कुचला

यह धडकन ने धडका

यह धन ने लूटा

यह जीवन ने तडपा

अब तुही जता कैसी खता करु क्या?

ओओओओओ! मेरे कान्हा!

"Vibrant Pushti"

हे प्यार की कसम!

हे प्रेम की कसम!

ले रही हूँ शपथ कान्हा

मैं होगी तेरी दीवानी प्रीत की

मैं हूँ तेरी राधा दिल की

तुने बसाया है धडकन में मुझको

नहीं बिछडता है हर रीत से मुझको

मैं भी बसाऊँगी तेरी प्रीत धडकन में

नहीं बिछडूँगी हर रीत से तुझ से

एक ज्योत प्रकटेगी तेरी मेरी प्रीत से

हर ज्योति से जागेगी प्रीत हमारी

हर प्रीतम आत्म को जोडेंगे प्रिये तक

यही कसम हम निभायेंगे जन्म जन्म तक

"Vibrant Pushti"

इतना मानव महेरागण

जो अगनित जीव, मन, जाति

और

धर्म, शिक्षण, संस्कार

और

प्रकृति, धरती, जल

और

आकाश, वायु, सूर्य किरण

और

विचार, क्रिया, रीति, वृत्ति

क्या क्या नहीं कहता है,

क्या क्या नहीं समझता है,

क्या क्या नहीं जगाता है?

जिससे क्या क्या नहीं होता?

बार बार परिवर्तन

बार बार सर्जन

बार बार विसर्जन

बार बार गर्जन

बार बार वर्धन

बार बार मर्दन

बार बार सृजन

यही है सत्य।

" Vibrant Pushti "

जानते है राधाजी को?

एक बार राधाजी की ठनबन हो गई अपने प्रियतम कृष्ण से। ऐसी ठनबन हो गई की वह खुद से निष्ठुर हो गई और निष्ठुर हो गई अपने प्रियतम से।

ऐसा न समझना की बार बार राधाजी ही रुठती है और कृष्ण उन्हें मनाते है।

यह निष्ठुरता है, रुठने मनाने की लीला नहीं है।

निष्ठुरता में राधाजी इतनी स्निग्ध हो गई की वह खुद ही अपने में ऐकात्म होने लगी, खोने लगी। न उन्हें खुद का पता था, न उन्हें उनका अस्तित्व का पता था।

युँ ही अटकती लटकती पल पल बहा रही थी। न उन्हें सुझ थी अपनी रीत की, न उन्हें बुझ थी अपनी गति की। चलती रही यह धारा और बढती रही यह क्रिया। न किसीका ख्याल, न किसीका भाल।

जो भी उन्हें देखें, जो भी उन्हें मिले, जो भी उन्हें कहें, जो भी उन्हें छूयें, न कुछ उन्हें होता न कुछ वह कुछ जताती, केवल अपने में खोई राधाजी जी रही थी।

न नैन सोते थे न नैन जागते थे,

न पलक मूंदती थी न पलक झुकती थी न पलक उठती थी,

जुल्फें कहीं ओर बिखरती थी जुल्फें कहीं ओर लहराती थी,

अधर थरथराते थे अधर सिसक सिसक थे अधर फडफडाते थे,

कर्ण बेसुरे थे कर्ण तुटक तुटक थे कर्ण अनसुने थे,

मुखडा आकुल व्याकुल बेरंग कुरंग था, था, मुखडा

ओहहह! कैसा यह हाल था कैसा यह झंझाल था।

राधाजी! ओहहह राधाजी!

कैसी यह ठनबन?

कैसी यह अनबन?

कैसी यह जीवन अगन?

कैसी यह प्रीत लगन?

साँसे रुक गई

धडकन बिछड गई

मन मर गया

तन सुक गया

दिल तुट गया

सृष्टि डूब गई

प्रकृति जल गई

धरती अस्थिर गई

राधाजी की रीत और गति ऐसी निराली और अनोखी हो गई थी कि हर कोई उलझन में रहने लगे थे।

सखी सहेलियां भी असमंजस में और खुद को अजुगता और अकल्पनीय अनुभव कर रही थी। हर सखी सोच रही थी कि हम क्या है? कैसे है और क्या कर रहे है?

ओहहहह! तो

न कोई उर्मि थी

न कोई उर्जा थी

न कोई उमंग था

न कोई रंग था

न कोई अठखेलियाँ थी

न कोई संग था

न कोई तरंग था

न कोई मस्ती थी

न कोई संगीत था

न कोई लीला थी

न कोई सूर था

न कोई महक थी

न कोई गूँजन था

न कोई इशारा था

न कोई तीव्रता थी

न कोई मादकता थी

न कोई गीत था

न कोई स्पंदन था

न कोई रुठना था

न कोई मनाना था

बस था केवल ऐक निष्ठुरता!

ओहहहह!

ओहहहह! तो कान्हा!

ओहहहह! तो प्रियतम!

ओहहहह! तो प्रीत!

नहीं नहीं! कान्हा!

नहीं नहीं!

वह कहाँ है? वह कैसा है? वह क्या करता है?

राधाजी की निष्ठुरता में वह भी निष्ठुर हो गया?

राधाजी की निष्ठुरता में वह क्या हो गया?

क्यूँ वह नजर नहीं आता?

क्यूँ उनकी भनक नहीं जताती?

क्यूँ उनकी तिरछी नजर कोई इशारा नहीं करती?

क्यूँ उनकी महक नहीं छूती?

क्यूँ उनकी चरण धूलि नहीँ उडती?

क्यूँ उनकी बंसरी के सूर नहीँ सुनातें?

क्यूँ उनकी आहट नहीँ गूँजती?

क्यूँ उनकी जुल्फें नहीँ लहराती?

क्यूँ उनका खेस नहीँ फहराता?

क्यूँ उनकी अदाएँ नहीँ नाचती?

क्यूँ उनके नटखट इशारे नहीँ कुछ कहता?

क्यूँ उनके निराले खेल नहीँ खेलता?

क्यूँ उनका नाच ता ता थैया नहीं नचाता?

कैसी है रीत और कैसी है प्रीत?

राधाजी के कदम कहां पड रहे थे न राधाजी का मन समझता था न तन जानता था। न स्थली का पता था न राह का पता था। न दिशा का पता था न कहां पहूँचने का पता था। बस चल रहे थे कहीं भटक रहे थे।

मन अनिर्णयी था तन थका था, धडकन अपने आप धडक रही थी, दिल रुका हुआ था।

राह सूनी थी, पैड सूके थे, पंछी शांत थे, पशु चूप थे, फूल नहीँ खिले थे, झरने नहीँ बहते थे, पत्ते बिखरे थे, पल रुक रुक कर बह रहा था।

ओह! राधाजी के मुख से चीख निकल गई! एक कंटक उनके पैर को छेद गया। ओहहह!

जैसे पैर को पकड कर धरती पर रखने की कोशिश करती है - एक हस्त उनके पैर को पकड लिया, धीरे से कंटक को निकाला और अपने हृदयस्थ चिपका दिया, अपने नेत्रों से बहते अश्रुधारा से पैर धो कर अपने अधरों से घाव को सुश्रुत करके, अपने प्रिये को अपनी बाहों से उठा लिया, धीरे धीरे एक शिला पर उन्हें बिठा कर अपनी प्रिया की आह पीने लगा।

"Vibrant Pushti"

साँवरा तो है साँवरिया

हर पल तडपे बावरियाँ

चैन नहीं प्रीत बिना

तरस रहे नैन तेरी साँस बिना

"Vibrant Pushti"

आसमान से निहारते है तारें तुम्हें

आसमान से झांकता है चंद्रमा तुम्हें

टिमटिमा के इशारे से पास बुलाये

चाँदनी के पथ से राह दिखाये

सच

कैसी हो हे नार नवेली!

धरती पर रहते भी आसमाँ पर बुलायें

कैसी है यह रीत तेरी और उनकी

जो पल पल तुं उपर खिंचती जायें

मैं बुलाऊँ तो नजर न आयें

मैं पुकारुँ तो सुन न पायें

मैं इशारुँ तो समझ न जायें

कैसी हो हे नार नवेली!

जो पल पल दौडी जायें

तारें बसायें सारे जुल्फों में

चाँद बसाया सारे मुखडें पे

फूल खिलायें अधर मुस्कान से

रंग बिखरायें सारे आँचल से

रात भर रंगरेलियां खेली

अंग अंग पर रस बरसाई

मधुर मधुर रास रचाई

तु तु न रही वह वह न रहा

छोड अकेला मुझे

कहीं क्या क्या लूट आई

कैसी हो हे नार नवेली!

जो पल पल बिछडी जायें

अब न कहना हे बेवफाई!

छोड़ूंगाँ मैं विरह बंसरी नाद सुनाई

न दौडी आना तोडने मेरी तनहाई

प्रीत है मेरी परम पवित्र सच्चाई

केवल केवल आत्म आत्म बसाई

जो केवल राधा ही ध्याहाई

इसलिए ही हूँ मैं कृष्ण कन्हाई।

"Vibrant Pushti"

रीत ही ऐसी निराली

नहीं अकेले चले वनमाली

मैं करु छोटासा इजहार

वह लूटाये सारा प्यार

पल पल भूलू प्रीत करार

क्यूँ न भागे विरह आधार

हे प्रियतम प्यारे!

कभी न बिछडना दिल द्वारे।

हे कान्ह!

"Vibrant Pushti"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

नयनों में जागते ही तुझे देखने को तन मन और आत्म तडपता है। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

होठोंसे स्वर गूँजते है, नाम तो नयन, मन, तन आत्ममें एक हो कर आंतर भाव जगाते है। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

अंगुलियोंसे लिखते है, नाम तो नयन, तन, मन आत्ममें व्याप हो कर, हर कहीं वोही द्रष्टिपात है। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

कर्ण से बसें यह तन, मन और आत्म में तो प्रीत का स्पंदन उठते है रोम रोम में। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

न सुनें न निहालें न पुकारें पर केवल स्मरण जागे **"कृष्ण"** सारा तन मन आत्ममें बस जाता है। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

साँस छूये, बूँद छूये, रज छूये, किरण छूये **"कृष्ण" "कृष्ण"** ही प्रकटे हर हर स्पर्श से। **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

जन्म धारण किया है - **"कृष्ण"**

जीवन अपनाया है - **"कृष्ण"**

तन मन आत्म संवारा है - **"कृष्ण"**

आनंद धन पाया है - **"कृष्ण"**

आत्म से परमात्मा जोडा है - **"कृष्ण"**

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

केवल और केवल जो जगाया है हर रीत से

केवल और केवल जो जगाया है हर संस्कृति से

केवल और केवल जो जगाया है हर सृष्टि से

केवल और केवल जो जगाया है हर कर्म से

तो है "प्रीत"

यह प्रीत है केवल निहालने **"कृष्ण"**

यह प्रीत है केवल पुकारने **"कृष्ण"**

यह प्रीत है केवल सुनने **"कृष्ण"**

यह प्रीत है केवल बसाने **"कृष्ण"**

यह प्रीत है केवल लूटाने **"कृष्ण"**

यह प्रीत है केवल लूटने **"कृष्ण"**

ओहहह **"कृष्ण"**

"Vibrant Pushti"

सारी उमरियाँ बितायी **"कान्हा"** तेरे प्यार में

सारी साँसें लूटायी **"कान्हा"** तेरे आनंद में

सारी नजरें बिछायी **"कान्हा"** तेरे दिदार में

सारी सोच घुमायी **"कान्हा"** तेरे चारित्र्य में

सारी धडकन पुकारी **"कान्हा"** तेरे स्मरण में

सारी बुद्धि संवारि **"कान्हा"** तेरे कर्मलीला में

सारी काया घिसाई **"कान्हा"** तेरे स्पर्श में

सारी प्रीत पिलायी **"कान्हा"** तेरे विरह में

हे **कान्हा!**

"Vibrant Pushti"

हे प्रियतम!

क्या मन पाया है!

सोचते है, सोचते ही रहें, सोचते ही रहते है।

क्या तन पाया है!

करते है, करते ही रहें, करते ही रहते है।

क्या नैन पाया है!

निहारते है, निहारते ही रहें, निहारते ही रहते है।

क्या कर्ण पाया है!

सुनते है, सुनते ही रहें, सुनते ही रहते है।

क्या होठ पाया है!

पुचकारते है, पुचकारते ही रहें, पुचकारते ही रहते है।

क्या मुखडा पाया है!

संवारते है, संवारते ही रहें, संवारते ही रहते है।

क्या दिल पाया है!

पिघलते है, पिघलते ही रहें, पिघलते ही रहते है।

क्या साँस पायी है!

छूते है, छूते ही रहें, छूते ही रहती है।

क्या रंग पाया है!

बिखरते है, बिखरते ही रहें, बिखरते ही रहते है।

क्या प्रीत पायी है!

झुरते है, झुरते ही रहें, झुरते ही रहते है।

हाँ! प्रिये!

"Vibrant Pushti"
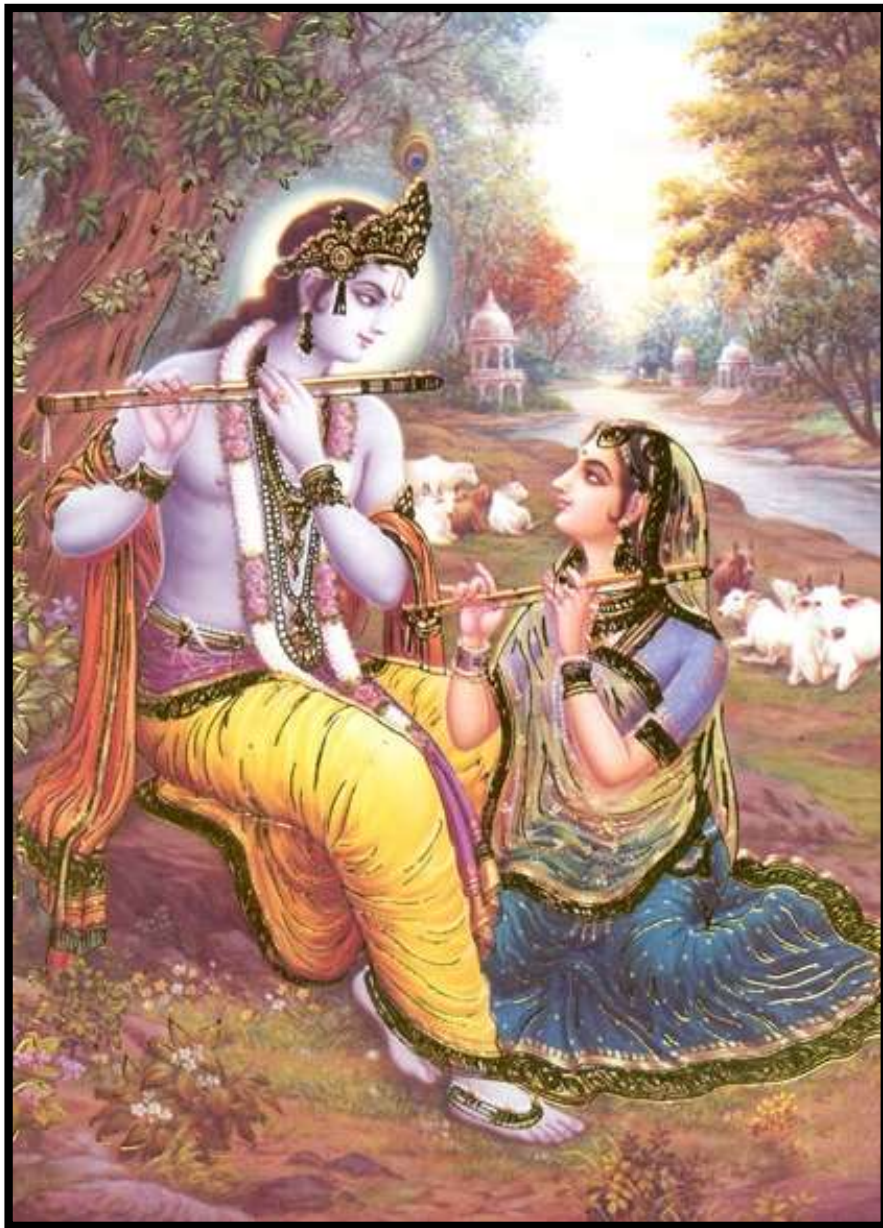
क्यूँ भटकती हो एक श्रद्धा ले कर

यह व्रज रज की प्रीत विरह वन में

अपनी साँस को छू ले

अपनी धडकन को छू ले

अपना विश्वास को छू ले

अपनी पुकार को छू ले

अपनी प्रीत को छू ले

शायद

यही तुम्हें व्रज प्रियतम मिलादे

नहीं है नैन रस बूँद बहाने को

नहीं है अधर रस स्वर बहाने को

है यह तो अलौकिक रस निहारने को

है यह तो अलौकिक रस पुकारने को

नैन रस बूँद का मूल्य न्यारा

प्रीत की रीत का अंश न्यारा

जो भीगे वह आंतर मन से डूबे

है यह रस जिसका तेज निराला

अधर रस स्वर का गूँजन मधुरा

संस्कार रीत की सूर धारा

जो टंकारे वह जीवन संवारे

है यह रस जिसका ज्ञान विराला

"Vibrant Pushti"

हे कान्हा!

ऐसी कैसी रीत जगाऊँ

जो तु मुझे अपनाये

ऐसी कैसी प्रीत जगाऊँ

जो तु मुझे रुलाये

ऐसा कैसे गीत सुनाऊँ

जो तु दौडा चले आये

ऐसा कैसे चित्त रचाऊँ

जो तु मन मित हो जाये

है! कुछ संकेत कर दे

जिसे तु मुझे राधा स्पर्श जताये

"Vibrant Pushti"

ढूँढता रहता हूँ

"श्री कृष्ण" को

जो रज रज में है

जो बूँद बूँद में है

जो कण कण में है

जो किरण किरण में है

जो उर्जा उर्जा में है

जो अक्षर अक्षर में है

जो स्वर स्वर में है

जो तत्व तत्व में है

जो ख्याल ख्याल में है

जो सृष्टि सृष्टि में है

जो सर्जन सर्जन में है

जो जरा जरा में है

जो सरगम सरगम में है

जो विरह विरह में है

जो आत्म आत्म में है

जो पत्ते पत्ते में है

जो बिज बिज में है

जो ध्वनि ध्वनि में है

जो ऐकात्म ऐकात्म में है

जो मिलन मिलन में है

जो रीत रीत में है

जो मन मन में है

जो धन धन में है

जो द्वार द्वार में है

जो द्रष्टि द्रष्टि में है

जो कर्म कर्म है

जो सेवा सेवा में है

जो गति गति में है

जो परिवर्तन परिवर्तन में है

जो धारणा धारणा में है

जो मान्य मान्य में है

जो सिद्धांत सिद्धांत में है

जो सत्य सत्य में है

जो आनंद आनंद में है

जो प्रीत प्रीत में है

ओहहहह!

तो कहा ढूँढे उन्हें?

कृष्ण कृष्ण सोचते सोचते कृष्ण कृष्ण में खो गये

कृष्ण कृष्ण कहते कहते कृष्ण कृष्ण के हो गये

कृष्ण कृष्ण करते करते कृष्ण कृष्ण में बस गये

कृष्ण कृष्ण पढते पढते कृष्ण कृष्ण को पा गये

कृष्ण कृष्ण सुनते सुनते कृष्ण कृष्ण में झूम गये

कृष्ण कृष्ण छूते छूते कृष्ण कृष्ण में समा गये

कृष्ण कृष्ण निहारते निहारते कृष्ण कृष्ण के शरणा गये

कृष्ण कृष्ण प्रिये प्रिये कृष्ण कृष्ण के प्रियतम हो गये
"Vibrant Pushti"

तेरी तिरछी नजर ने क्या तिर छोडा

अँखियाँ भूल गई है लपकना

तेरे अपलक नैन ने क्या जादू किया

नैना भूल गये फडकना

तेरे नयन ने क्या तस्वीर जगाई

अँखियाँ भूल गये मूँदना

तेरे निहारने ने क्या जलवा दिखाया

नैना भूल गये औरों को बसाना

तेरे तन के झरुखें ने क्या रीत सजाई

अँखियाँ भूल गये बरसना

तेरे नैना ने क्या मिचौली खेली

नैना भूल गई है सोना

हे कान्हा!

कैसे कैसे खेल रचें तेरे नैन

नैनन तेरी प्रीत तरसे

अँखियाँ से तेरी विरह तडपे

"Vibrant Pushti"

हर धूलि में है किसीका स्पर्श

हर नजर में है किसीकी तस्वीर

हर साँस में है किसीकी ज्योति

हर पुकार में है किसीका इंतजार

हर डग में है किसीका साथ

जो हर रीत से थामता है तुम्हारा हाथ

"Vibrant Pushti"

कंकर कहे कृष्ण कृष्ण

रज कहे राधा राधा

कीटक कहे कान्हा कान्हा

वन कहे बनवारी बनवारी

गूँज कहे गिरधारी गिरधारी

बूँद कहे बाँके बिहारी

घन कहे घनश्याम श्याम

निकुंज कहे नटखट कान्ह

गौआँ कहे गोपाल गोपाल

गोपि कहे गोविंद गोविंद

पथ कहे पाथेय पाथेय

नाद कहे श्री नाथ श्री नाथ

मन कहे मोहन मोहन

तन कहे तिरछे मदन

वृक्ष कहे वल्लभ वल्लभ

पगडंड कहे परिकर गिरिवर

मौन कहे माधव माधव

धडकन कहे द्वारकाधीश

नैनमूंद कहे मुकुंद मुकुंद

साँस कहे साँवरिया साँवरे

प्रीत कहे प्रियतम प्यारे

पंकज कहे प्रियवर राधावर

"Vibrant Pushti"

चलते चलते छूते छूते यह रज आत्म को छू गयी

आत्म में बसते बसते सारे तन में बस गयी

तन के रोम में ठहरते ठहरते मन में स्थिर हो गयी

मन रज तन रज आत्म रज, रज से प्रीत हो गयी

सोचते सोचते सारी सृष्टि रज रज हो गयी

अंग रज, प्रकृति रज, क्रिया रज, ओहहह! रज ही सर्वत्र हो गयी

कैसी है यह रज जो खुद को पागल कर गयी

ओहहह! हाँ!

यह तो रज "व्रज रज" है

तो

क्यूँ न प्रीत में न डूबोयें!

क्यूँ न विरह की आग न भडकायें!

क्यूँ न पागल का ऐकरार न करवायें!

क्यूँ न दिल में "कान्हा" की याद न जगायें!

क्यूँ न मन को "कान्हा" की लीला में न मचलायें!

क्यूँ न तन को "कान्हा" के विरह में न तडपायें!

क्यूँ न नैन में "कान्हा" की तस्वीर न नचायें!

ओहहह! व्रज रज!

"Vibrant Pushti"

हे कान्हा!

कैसा है रे तु!

धरती का आँचल जैसा

आकाश की अनंता जैसा

सागर की स्वीकृति जैसा

पवन की मादकता जैसा

सूरज की तीव्रता जैसा

माँ की ममता जैसा

पिता की शिस्तता जैसा

पुत्र की सेवा जैसा

पत्नी का विश्वास जैसा

मनुष्य जीवन की कर्मथा जैसा

धर्म का सिद्धांत जैसा

प्रीत का आनंद जैसा

पंकज की विरहता जैसा

रज रज की उत्तेजना जैसा

"Vibrant Pushti"

छलके तेरे नैनन से प्रीत बूँद

बरसे तेरे नैनन से प्रीत बिरह बूँद

पलकें तेरे नैनन खींचे प्रीत तस्वीर

तरसे तेरे नैनन खींचे प्रीत तकदीर

झुके तेरे नैनन करें प्रीत ऐकरार

मूंदे तेरे नैनन करें प्रीत इंतजार

अपलक तेरे नैनन गायें प्रीत गीत

तिरछे तेरे नैनन करें प्रीत मिलन संकेत

बंध तेरे नैनन तडपायें यादें प्रीत तरंग

फरके तेरे नैनन भटकायें प्रीत विरह रंग

कैसा है रे कान्हा!

तेरे नैनन चुरायें प्रीत दिल मधुर रस अमृत

"Vibrant Pushti"

"राधाष्टमी" प्रश्चयात "श्रीराधाजी" की हर सखी का प्राकट्य हो जाता है।

क्यूँ?

नहीं सेवा के लिए

नहीं कोई माध्यम के लिए

नहीं कोई वास्ता के लिए

नहीं कोई धारणा के लिए

नहीं कोई संबंध के लिए

नहीं कोई संकेत के लिए

नहीं कोई रीत के लिए

नहीं कोई सर्जन के लिए

नहीं कोई बंधन के लिए

नहीं कोई सखावत के लिए

नहीं कोई सखी कृति के लिए

नहीं कोई सखा भाव के लिए

नहीं कोई सखी सहारे के लिए

नहीं कोई सखी सहेली के लिए

हर चरित्र को पहचानना ही है

हर ज्ञान भाव को समझना ही है

हर प्रीत रीत को स्पर्श करना ही है

हर विचार कृति को सूक्ष्मता से ही जगाना ही है

हर लीला को अपनी आत्मीय ज्योत से प्रीत दीपक जलाना ही है

हर प्रीत विरह बास्प को साँसों से घुटना ही है

हर प्रीत मिलन रस को अपने अधर से पीना ही है

हर प्रीत शृंगार रुप में साँवरा रंग से रंगाना ही है

हर प्रीत अपलक नैन से प्रियतम के दिल में समाना है

"राधा"

"Vibrant Pushti"

हे सखी ! मेरे प्रिये के संग तुम खेलो प्रीत का रंग

जो मेरे मन बस्या - जो तेरे संग रसया

खेले अटखलियाँ

तो

सखा सखी जगया यही सखी संज्ञा

"राधा" अलौकिक उर्जा

"राधा" अलौकिक उर्मि

"राधा" अलौकिक स्पंदन

"राधा" अलौकिक तीव्रता

"राधा" अलौकिक उत्तेजना

"राधा" अलौकिक उमंग

"राधा" अलौकिक संवेदना

"राधा" अलौकिक तृष्णा

"राधा" अलौकिक झंखना

"राधा" अलौकिक गूँज

"राधा" अलौकिक धून

"राधा" अलौकिक रज

"राधा" अलौकिक स्पर्श

"राधा" अलौकिक बूँद

"राधा" अलौकिक किरण

"राधा" अलौकिक साँस

"राधा" अलौकिक रंग

"राधा" अलौकिक तरंग

"राधा" अलौकिक सर्जन

"राधा" अलौकिक मर्जन

"राधा" अलौकिक कूंजन

"राधा" अलौकिक गर्जन

"राधा" अलौकिक पूजन

"राधा" अलौकिक मिलन

"राधा" अलौकिक वंदन

"राधा" अलौकिक थान

"राधा" अलौकिक तान

"राधा" अलौकिक ज्ञान

"राधा" अलौकिक तन

"राधा" अलौकिक मन

"राधा" अलौकिक जन्म

"राधा" अलौकिक सेवक

"राधा" अलौकिक सेवा

"राधा" अलौकिक धारा

"राधा" अलौकिक धर्म

"राधा" अलौकिक प्रेम

"राधा" अलौकिक उल्फत

"राधा" अलौकिक प्यार

"राधा" अलौकिक विरह

"राधा" अलौकिक प्रीत

"राधा" अलौकिक प्रियतम

"राधा" अलौकिक प्रिया

"राधा" अलौकिक साँवरा!

"राधा" अलौकिक कान्हा!

"राधा" अलौकिक श्याम!

"राधा" अलौकिक गोपाल!

"राधा" अलौकिक मोहन!

"राधा" अलौकिक कन्हैया!

"राधा" अलौकिक घनश्याम!

"राधा" अलौकिक गोविंद!

"राधा" अलौकिक गिरधर!

"राधा" अलौकिक शामळा!

"राधा" अलौकिक मदन!

"राधा" अलौकिक मुरलीधर!

"राधा" अलौकिक बाँके बिहारी!

"राधा" अलौकिक दामोदर!

"राधा" अलौकिक मुकुंद!

"राधा" अलौकिक माधव!

"राधा" अलौकिक कृष्ण!

"राधा" अलौकिक पंकज शरण!

"Vibrant Pushti"

होता है कुछ

क्या है यह कुछ

क्यूँ हुआ है मुझे कुछ

मैं जो कुछ हुई

मैं जो कुछ भई

थरथराऊँ हर पल

बलखाऊँ हर पल

मुस्कुराऊँ हर पल

बरसाऊँ हर पल

अपलकुँ हर पल

जगाऊँ हर पल

पुकारुँ हर पल

तरसुँ हर पल

तडपुँ हर पल

रीसाऊँ हर पल

बिछडुँ हर पल

झबकुँ हर पल

नाचुँ हर पल

गाऊँ हर पल

रोऊँ हर पल

खोऊँ हर पल

सजुँ हर पल

हसुँ हर पल

तुटुँ हर पल

हारुँ हर पल

नासुँ हर पल

किससे है कुछ

जो

मुझसे मुझे चुरायें

मुझसे मुझे लूटायें

मुझसे मुझे रंगायें

मुझसे मुझे बिछडायें

मुझसे मुझे तडपायें

मुझसे मुझे छूपायें

मुझसे मुझे मिलायें

मुझसे मुझे समायें

मुझसे मुझे सजायें

मुझसे मुझे खोजायें

नहीं कुछ कर सकु अब

तेरी अब तेरी ही बस

मुझसे तु ही तु

तेरी सदा सदा ही तेरी

ओ कान्हा!

तेरी तेरी सिर्फ तेरी

ओहहह! तेरी

हाँ तेरी

तेरी ही तेरी

"Vibrant Pushti"
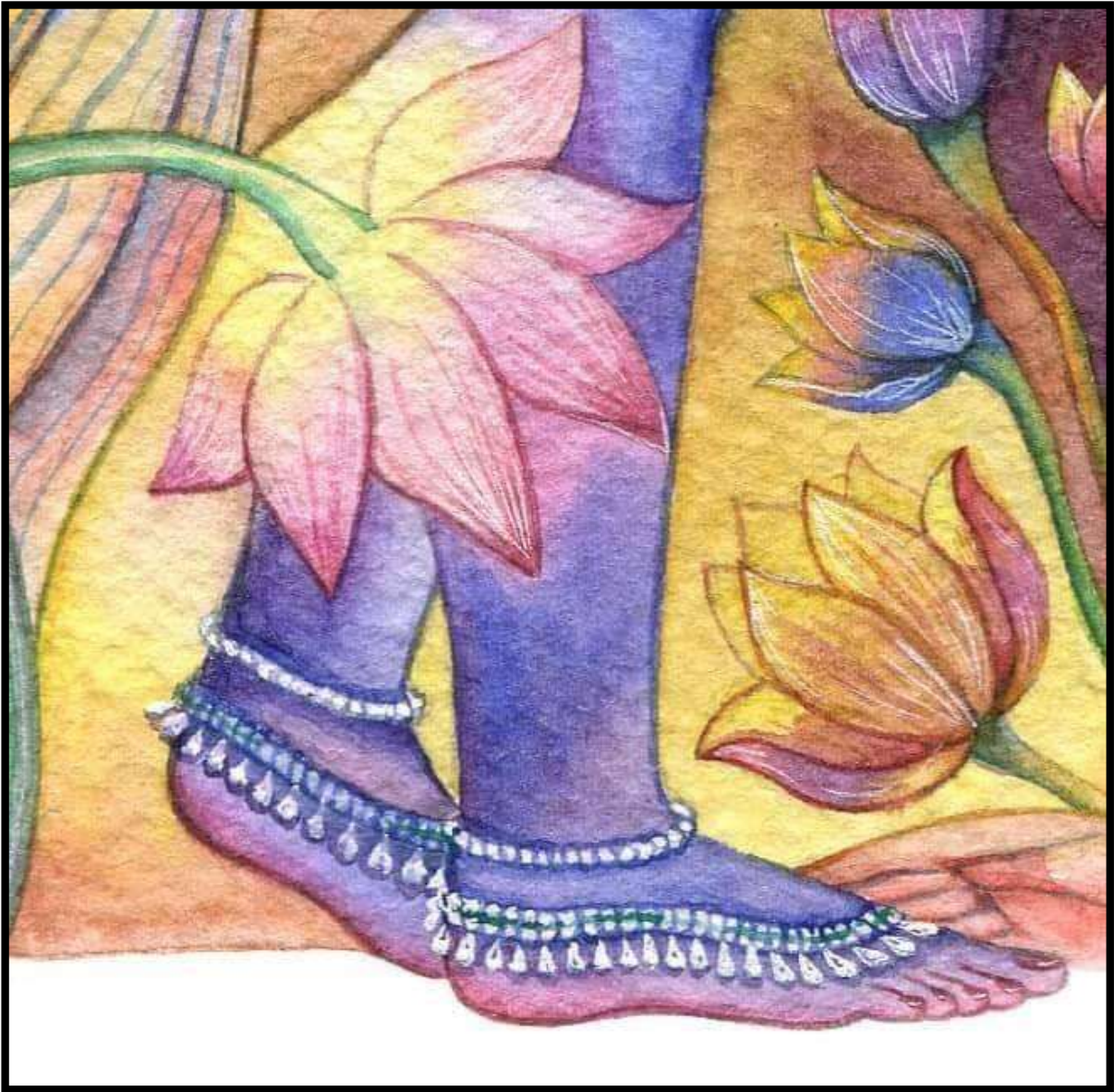
जुल्फों को गूँथा है ऐसे

निगाहों को सँवारा है ऐसे

अधरों को सजाया है ऐसे

साँसों को महकाया है ऐसे

आँचल को ओढा है ऐसे

हे कान्हा!

तुम्हें बाधुगां ऐसे

तुम्हें बसाऊँगा ऐसे

तुम्हें पिलाऊँगा ऐसे

तुम्हें लहराऊँगा ऐसे

तुम्हें छूपाऊँगा ऐसे

न कभी दूर रहे

न कभी बिछडे

न कभी अछूते

न कभी पलछिने

ऐसी है रे प्रिये प्रीत साँवरे!

पधारे है श्री प्रभु प्रीत असर से

किया इबादत हर आत्म ने

अब न जाये हमसे बिछडके

ऐसे खुद को सुंदर धरियो जी

हर एक गोपि हर एक सखा

नित नित राधा घडिये जी

यही रीत है प्रियतम पाने

कृष्ण कृष्ण से निकट रहने की

"Vibrant Pushti"

नील गगन की छाँव में

सूरज की सानिध्य में

सितारों की साथ में

चंद्रमा के आलंगन में

बरखा की बूँद में

मेघधनुष के रंग में

बसा है मेरा साँवरिया

मेघधनुष का मयूर पंख सजाके

बरखा का रंग सजाके

चंद्रमा का मुखडा सजाके

सितारों की माला सजाके

सूरज का आभूषण सजाके

नील गगन का आँचल सजाके

मधुरी सी बंसरी बजाता

नटखट नयनों से नाच नचाता

फूल गुलाबी होठं लचकता

घने बादलों का काजल पुरता

ग्रहों की माला पहनता

प्रीत की पायल गूँजता

आ रहा हे मेरा साँवरिया

"Vibrant Pushti"

हे जागो सोने वालों!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये ब्रज की बाला

खेलेंगे मिल कर रास लीला

चूराये प्रीत से दिल की अठखेलियाँ

आ रहा है मेरे प्रियतम साँवरिया!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये गोकुल के ग्वाला

खेलेंगे मिल कर माखन चोरी लीला

लूटाये संसार की दामन ठीला

आ रहा है मेरा बंसी बजैया!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये यमुना की धारा

नटखट लाला रचेंगे निकुंज लीला

पुष्टि भक्ति रीत की प्रकटेगी सेवा

आ रहा है मेरा कृष्ण कन्हैया!

"Vibrant Pushti"
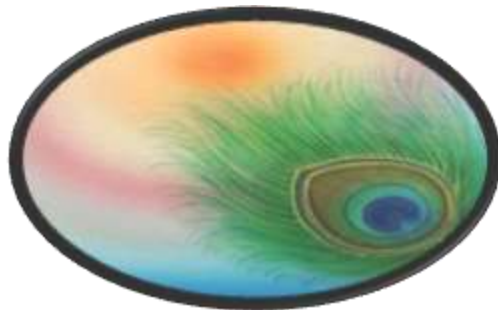
ओय!

उनकी पहली नजर के तीर

नैनन में ज्योति चमक गयी

होठों पर पंखुडि खिल गयी

कानों में सरगम गूँज गयी

धडकन में सुरखी जाग गयी

मन में मधुरता व्याप गयी

तन में स्पंदन रोमांच गयी

साँस में सुगंध बस गयी

दिल में प्रीत उत्कर्ष गयी

मेरे जीवन से नाम जुड गयी

"कान्हा"

ओहहहह कान्हा!

"Vibrant Pushti"

एक बूँद नैनन की सागर डूबो देती है

एक स्पर्श अधर का चांदनी जला देती है

एक याद प्रियतम की प्रीत तडपा देती है

एक साँस विश्वास की ब्रह्मांड हिला देती है

एक प्यास पवित्र की गगन तरसा देती है

एक पुकार सत्य की श्रीप्रभु लूटा देती है

एक बीज पाप का धरती उखाड देती है

"Vibrant Pushti"
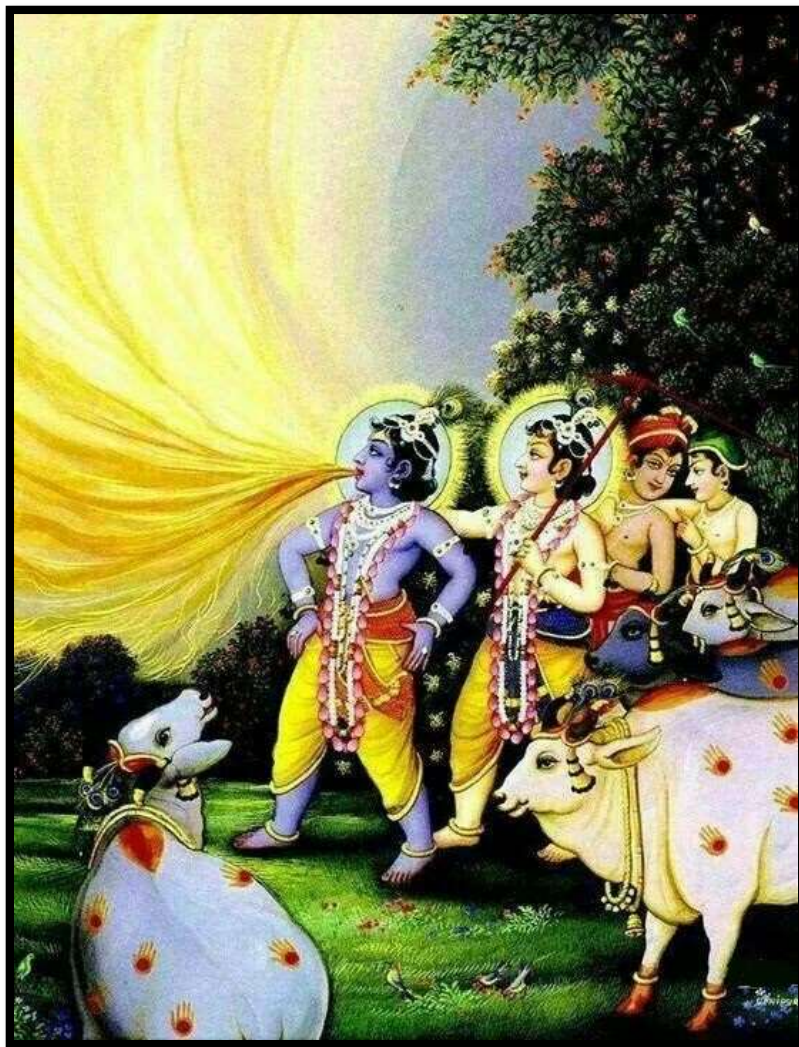
हे कृष्णा! कितनी सर्वोत्तम कृपा है मुझ पर

मैं तुम्हें जगाऊँ

हे कृष्णा! कितनी सर्वाधिक ममता है मुझ पर

मैं तुम्हें संभालुँ

हे कृष्णा! कितनी विशुद्ध रीत है मुझ पर

मैं तुम्हें पुकारुँ

हे कृष्णा! कितनी पवित्र करुणा है मुझ पर

मैं तुम्हें अपनाऊँ

हे कृष्णा! कितनी मधुर ममता है मुझ पर

मैं तुम्हें सुश्रुसाऊँ

हे कृष्णा! कितना सर्वोच्च विश्वास है मुझ पर

मैं तुम्हें प्रीत करुँ

ओहहहह मेरे श्याम!

"Vibrant Pushti"

याद किसीकी फरियाद नहीं है
है फिर फिर कर याद
फिर फिर की याद ही ऐसी
जो याद से याद मिलाये
जो याद से याद कहाये
जो याद से याद मिटाये
जो याद से याद बुलाये
जो याद से याद पुकाराये
कान्हा!
कितनी यादें रखी है दिल में
कितनी यादें बसायी है मन में
कितनी यादें छूपायी है तन में
तुम्हारी याद से उभरी यह यादें
तुम्हारी याद से जागी यह यादें
यादों से विरह बरसाना
यादों से प्रीत ढ्रड करना
यादों से भूल जताना
यादों से निकट रहना
यही ही रहा है अब तेरी याद में
साथ साथ रहूँगा यही ही यादों से
"Vibrant Pushti"

"कृष्ण नाम जब ते स्त्रवन सुन्यो
तब ते भूली सुध बुध री

भरी भरी आवें नैन, चित न रहे चैन

प्रीत कर गयो ऐसी री

न मैं मैं रही न रहा मेरा जीवन

हुई पिया बावरी भटक रहु अपलक रैन"

"Vibrant Pushti"
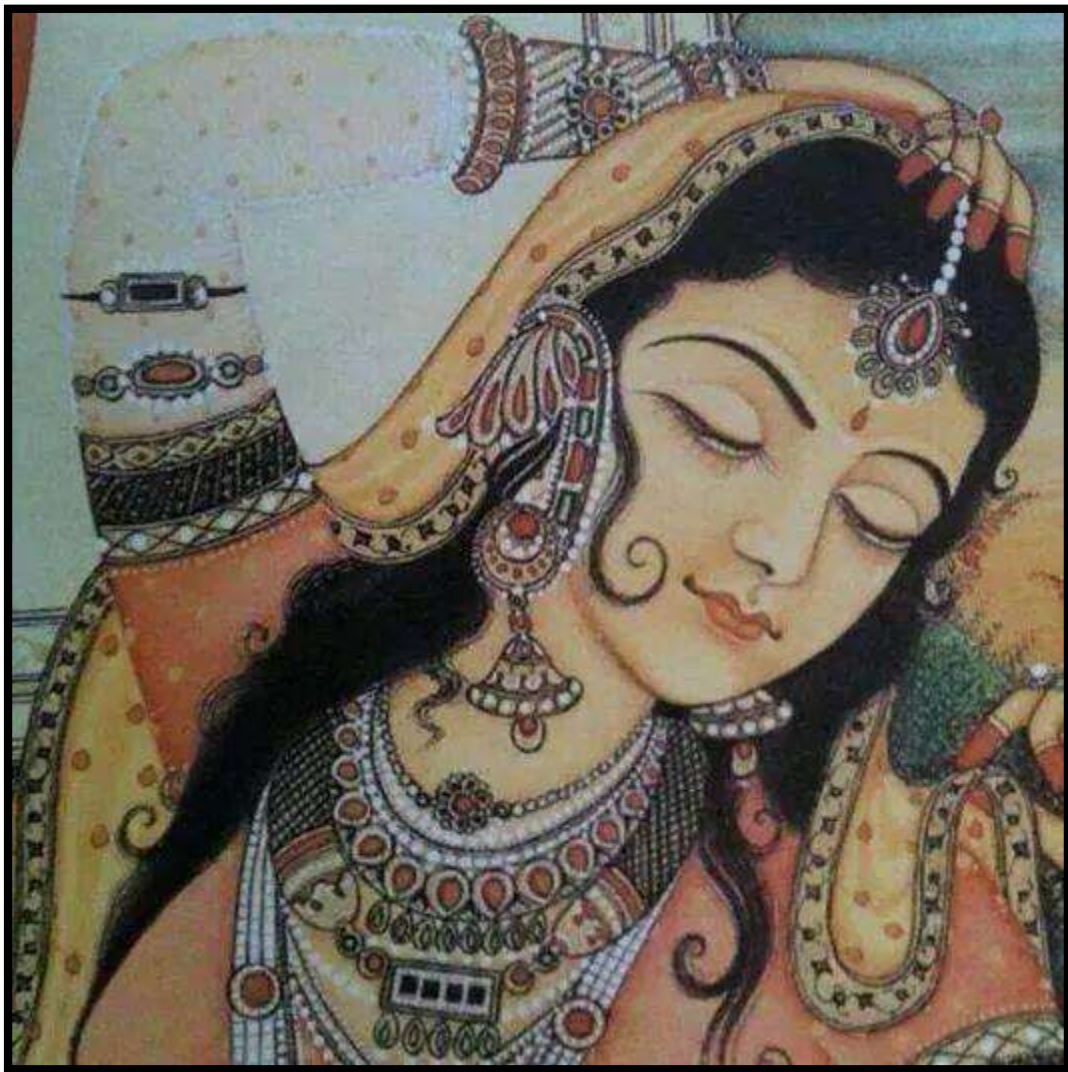
हे श्याम सुंदर!

जब भी मैं तुम्हारी तस्वीर मेरे नयन से छूती हूँ

मेरे नयन तिरछे और कजरारे हो जाते है।

हे श्याम सुंदर!

जब भी मैं तुम्हारे चरण स्पर्श मेरे हाथों से करती हूँ

मेरे हस्त मधुर पंकज हो जाते है।

हे श्याम सुंदर!

जब भी मैं तुम्हारे अंग को मेरे ज्ञान भाव से सेवा में पधराती हूँ

मेरा दिल प्रीत मधु हो जाता है।

हे श्याम सुंदर!

जब भी मैं तुम्हारे तन मन धन को कीर्तन से छूता हूँ

मेरा जीवन की हर क्षण अलौकिक सौंदर्य हो जाती है।

अब तुम कहो तुम सौंदर्य का अलौकिक अखूट भंडार हो

तो मैं भी एक रज की धूल तुझे छूते ही सुंदर सी तेरी छाया हूँ।

"Vibrant Pushti"

हे कृष्णा! तेरे नयन चाँद सूरज जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन गंगा यमुना जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन माँ के आँचल जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन प्रियतम प्रीत जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन मधुर सरगम जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन दिल कंवल जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन धरती ममता जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन बूँद बूँद बरसात जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन रज रज व्रज जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन भक्त आश आतुर जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन परम प्रिये क्षमा जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन ज्ञान पिपासु जैसे

हे कृष्णा! तेरे नयन मेरे ह्रदय उर्मि जैसे

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण" की मृत्यु तीर से कभी नहीं हो सकती।

इतिहास घुमा रहा है, शास्त्र घुमा रहा है।

जो केवल और केवल प्रीत करता है, उनकी मृत्यु ऐसे नहीं हो सकती।

"राधा" सच कहे - यह प्रीत धारा है तो "श्री कृष्ण" ऐसे नहीं मृत्यु पा सकते है।

यही ही सत्यता है कि "श्री कृष्ण" की मृत्यु तीर से नहीं हुई है, चोक्कस नहीं हुई है।

"श्री कृष्ण" की मृत्यु केवल और केवल "राधा" से या "राधा" की असर से ही हो सकती है।

सोच कर हमें चोक्कस बताना

"Vibrant Pushti"

तुझे गंगा समझता हूँ

तुझे यमुना समझता हूँ

समझता हूँ तुम्हें प्रीत की श्यामा

समझता हूँ तुम्हें विरह की मीरा

तुझे साँस समझता हूँ

तुझे विश्वास समझता हूँ

नयन ढूँढे जहाँ जहाँ

मन तडपे कहाँ कहाँ

क्या करुँ कैसे रहु सुना सुना

क्या कहूँ कैसे जीऊँ अकेला अकेला

मेरी साँवरि!   मेरी श्यामा!

मेरी कान्ही!   मेरी घनश्यामा!

पास है तो भी दूर है

दूर है तो भी निकट है।

"Vibrant Pushti"

छीन छीन कर मैं पलछीन हो गया

न कोई पल है न कोई कुछ छीन सकता है

अब तो आजा साँवरिया!

न तुझे देने के लिए कुछ है

न मुझे लेने के लिए कुछ है

लूट लिया संसार ने लूटा दिया जगत को

न कोई मुझे लूट सकता

न मैं खुद को लूटा सकता

क्यूँकि अब मैं ही तु हूँ, तु ही मैं हूँ

मुखडा दिखाजा ओ साँवरिया!

कैसा हुआ चमत्कार

मैं खुद हो गया साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

नींद नहीं आती है सैया तेरे इंतजार में

जागता है मन किसीके तरंग से

तडपता है मन किसीके स्पर्श से

न तन चाहिए न मन चाहिए प्रीत के स्पर्श में

एक तरंग ही काफी है एक दूजे के मिलन को

" Vibrant Pushti "

हे प्रिये!

जन्म जन्म का साथ है तुम्हारा हमारा

जब तक न मिले आत्मा तुमसे हमारा

न तु चैन से रहेगा न हम बैचैन रहेंगे

चलता रहेगा सिलसिला अपने प्यार का

तुम मुझे ढूँढते रहोगे मैं तुम्हें पुकारता रहूँगा

कभी तु अवतार ले कर मुझसे मिलने आओगे

कभी मैं तेरे लोक परलोक में बसने आऊंगी

तेरा वादा तु निभाना मेरा वादा मैं निभाऊँगी

यही है तेरी मेरी रीत यही है तेरी मेरी प्रीत

जो तु कितना दूर रहे जो मैं कितना बिछडता रहूँ

मेरा सदा समर्पण शरण में धरना

मेरा सदा स्वीकार हर पल करना

"Vibrant Pushti"

हे कान्हा! तुझे मेरे घुंघराले बालों से बांधु

तुझे मेरे कजरारे काजल से बांधु

तुझे मेरे होष्ट गुलाबी पंखुड़ियाँ से बांधु

तुझे मेरे गले सजी मोतीयन माला से बांधु

तुझे मेरे हस्त अंगुली अंगूठी से बांधु

तुझे मेरे पायल पुकार झंकार से बांधु

तुझे मेरे तन लहराते आँचल से बांधु

बार बार भटक जाता है मन से

बार बार छटक जाता है तन से

बार बार फिसल जाता है होठों से

बार बार निकल जाता है दिल से

बार बार छूप जाता है नैनन से

क्या करुँ? क्या करुँ?

"Vibrant Pushti"

हे बादल! तु कहाँ से आया?

हे बादल! तु क्या बनके आया?

हे बादल! तु क्या करने आया?

हे बादल! तु किसका संदेश लाया?

हे बादल! तु कैसा रंग भर के आया?

हे बादल! तु कौनसा रुप हो कर आया?

हे बादल! तु कैसी रीत ले कर आया?

हे बादल! तु कौनसा सूर गाने आया?

हे बादल! तु क्या जगाने आया?

हे बादल! तु किसके इशारे आया?

हे बादल! तु क्या मिटाने आया?

हे बादल! तु ……………………

ओहहहहह!

"Vibrant Pushti"

कैसा है यह नयन

जो क्या क्या करता रहता है!

नयन से तीर छूटे

नयन से नजर चुराये

नयन से इशारा करें

नयन से बातें कहे

नयन से मन में समाये

नयन से चोरी करे

नयन से नाच नचाये

नयन से आग लगाये

नयन से प्यार जताये

नयन से आँख मिचौली खेले

नयन से जादू दिखाये

नयन से नीर बरसाये

नयन से ज्योत जगाये

नयन से दिल मचलाये

नयन से सपने सजाये

नयन से समाधि संधाये

नयन से सूरज उगाये

नयन से चाँद खिलाये

नयन से गीत सुनाये

नयन से दर्द मिटाये

नयन से लूट चलाये

नयन से प्रीत बरसाये

नयन से अमृत पिलायें

नयन से प्यास बुझाये

नयन से आशीर्वाद पाये

नयन से दिशा दिखायें

नयन से एकरार जताये

नयन से विरह समझायें

नयन से मीत मिलाये

नयन से स्पर्श इजहारे

नयन से पहचान कराये

नयन से ....

"Vibrant Pushti"

रात का शमा न झुके नैना

काजल सा आसमाँ

मन में जागे घनश्यामवाँ

पुकारें सांसों से धडकनवाँ

कैसे रहे दूर हे साँवरिया

कुछ तो जताजा

तडपते रहती है यह बावरीयाँ

" Vibrant Pushti "

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे"

यह रचना कैसे हुई और क्या समझा रही है?

यह प्रश्न हमने पहले भी पूछा था न कोई उत्तर पाया गया।

हम बार बार कृष्ण कृष्ण करते है पर कृष्ण नाम और कृष्ण लीला समझते नहीं है तो हम क्या कर रहे है यही नही समझते है तो धर्म और अध्यात्म से हमारा जीवन को कैसे संवारेंगे?

बस यूँ ही चलते रहेंगे एक बिना नाविक की नौका की तरह।

किताबों के अक्षर तो कहीं पढ़ें

किताबों के पन्नों तो कहीं लिखें

किताबों के लेख कहीं कोपी पेस्ट करके गये

पर न खुद जागे न ओरों को जगाया बस यूँ ही करते करते जीवन बिता दिया।

बातें तो बहुत होती है दूसरे के सुधरने के सूचन की पर खुद के संकल्प का न कोई ख्याल है।

न डूबो समय की धारा में

तैरना है "कृष्ण" नाम से

न डूबो अंधश्रद्धा के वमल में

संवरना है "कृष्ण" प्रीत से

न डूबो संसार की मोह माया में

पाना है "कृष्ण" भक्ति स्पर्श से

न डूबो आज के अंधे कुलों से

"कृष्ण" "कृष्ण" को लूटना है

"कृष्ण" "कृष्ण" समझ कर

"Vibrant Pushti"

है श्याम!

घनश्याम बादलों ने नैनों में काजल लगाया

शाम की लालीमा ने अधर पर गुलाबी बरसायी

सूरज चंदा ने कानों में कुंडल सजाया

धरती के पीले फूलों ने पीतांबर पहनाया

मयूर पंख ने शीर पर मुकुट सजाया

मेरी प्रीत के रंग ने तन मन को रंगाया

तु है अब मेरा साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

"राधा" र + अ + ध + अ = राधा

र - रस

र - रज

ध - धरण

रस रंग रूप धरण

रस रंग रूप रज नित्य नूतन धरण

रस रंग रूप रज तनुनवत्व धरण

रस रंग रूप प्रकट जुडत मन नयन तन

रस रंग रूप रज स्पर्श आत्म परम मिलन

रस रंग रूप रज घट घट परिवर्तन

रस रंग रूप रज प्रीत पंकज शरण

प्रकट कृष्ण प्रकट राधा प्रकट श्याम साँवरा

गोविंद गोपाल गिरिधर घनश्याम शामळा

मधुर जीवन मधुर जनम मधुर परमानंद

सर्वत्र मधुर क्षण मधुर साँस मधुर पूर्णानंद

"Vibrant Pushti"

कृष्ण को ढूँढने नैन को कहीं दूर तक पसराया

कृष्ण को बुलाने होंठों को कहीं जोर से आवाज लगाई

कृष्ण को पकडने हाथों को कहीं दूर तक फैलाया

कृष्ण को तलाश ने पैरों को कहीं दूर तक चलाया

कृष्ण को छू ने मन को कहीं ब्रह्मांड में घूमाया

कृष्ण को पाने तन को कहीं जन्मों तक जन्माया

कृष्ण को बसाने आत्म को कहीं युगों तक तडपाया

कृष्ण स्पर्शा मैं ने ....

"Vibrant Pushti"

"व्रज" क्या है ऐसा जो व्रज सुनते, व्रज पढ़ते, व्रज लिखते ही आंतर तन मन और आत्म को कुछ होता है?

हम जीव तत्व आत्म तत्व धारी है और हमें बार बार व्रज क्यूँ आकर्षित करता है ?

हमारा जन्म हिंदुस्तान में होने से हममें बार बार कृष्ण भाव क्यूँ जागता है?

व्रज का व्यापारी करण होता जा रहा है फिरभी हमें व्रज आनंद देता है, क्या है हम?

व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज

"Vibrant Pushti"

व्रज मेरे मन बसयो तन बसयो धन बसयो जीवन बसयो

राधा मेरे आत्म बसयो परमात्मा बसयो स्वराट आत्म बसयो

कान्हा मेरे अंग बसयो संग बसयो रंग बसयो

"व्रज" क्या है ऐसा जो व्रज सुनते, व्रज पढ़ते, व्रज लिखते ही आंतर तन मन और आत्म को कुछ होता है?

हम हर बार अष्ट सखा चरित्रों पढ़ते रहते है, हम हर बार गिरिराज जी दर्शन करते रहते है, हम हर बार यमुना पान और यमुना जी आरती दर्शन करते रहते है, हम हर बार गोकुल की महाप्रभुजी की बैठक की लीला गाते रहते है पर कभी खुद के चिंतन में, खुद के जीवन में संस्कृत करते है?

ना! हमें तो फुर्सत ही कहां!

हमें तो घूमना आता है, जानने की समझ कहां!

हम तो वहां पहुँचे बस, सहेलाणीयों की तरह देख लिया, कुछ शुद्धता अशुद्धता कर ली, हो गई यात्रा!

वाह! हम ने व्यापार कर लिया जीवन से और जीवन देने वाले से, अब उनकी मर्जी।

व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज व्रज

कैसे जानेंगे, कैसे स्पर्श पायेंगे!

श्याम तेरे कितने जन्म?

"Vibrant Pushti"

ये तीरछी नजर उफ यूँ मा

ये तीरछी पैरों अदा उफ यूँ मा

ये कमल से अधर उफ यूँ मा

ये बंसरी आरव उफ यूँ मा

ये मुस्कान मुखडा उफ यूँ मा

ये मुखडा किरण उफ यूँ मा

नयन में बसते बसते नटखटता

अधर मचलते मचलते निकटता

मुखडा मलकते मलकते लूटता

पैर थनकते थनकते जीना सिखाता

हे मेरी प्रिये श्यामा!

"Vibrant Pushti"

"साँवरिया" से कहना
"साँवरिया" तु कैसा है रे!
"साँवरिया" से पूछना
"साँवरिया" तु कहाँ है रे!
"साँवरिया" से बोलना
"साँवरिया" तु क्या कर रहा है
"साँवरिया" से ढोलना
"साँवरिया" तु क्यूँ कर रहा है!
क्या है हम तेरे "साँवरिया"
जो तु हर दम करता रहता है,
नैन मिचौली खेलता है
मन से मन टकराता है
तन से तन थरथराता है
दिल से दिल जोडता है
आत्म से आत्म मिलाता है
प्रीत की रीति जगाता है
मधुर मधुर रस पीलाता है
संसार अगन जलाता है
"Vibrant Pushti"

"मन मीत" जो आग लगाये उसे कौन बुझाये?

"अधरामृत" जो प्यास लगाये उसे कौन मिटाये?

"माझी" नाँव डूबोये उसे कौन बचाये?

"Vibrant Pushti"

नैन एक अधर एक साँस एक धड़कन एक आत्म एक

एक एक से एक

एकाकार से एकात्म

एकात्म से परमात्म

प्रीत रज को व्रज रज कर दे
प्रीत बूँद को यमुना कर दे
प्रीत विरहाग्नि को सूर्य कर दे
प्रीत मन को मधुरा (मथुरा) कर दे
प्रीत तन को गिरिराज कर दे
प्रीत आत्म को गोलोक धाम कर दे
प्रीत धडकन को वृंदावन कर दे
प्रीत साँस को पुष्टि कर दे
प्रीत विचार को सुबोधिनी कर दे
प्रीत कर्म को रास लीला कर दे
प्रीत जीवन को गौचारण कर दे
प्रीत अंग को श्याम कर दे
प्रीत स्मरण को गोपिगीत कर दे
प्रीत स्पर्श को बंसी कर दे
प्रीत उर्मि को शृंगार कर दे
प्रीत स्वर को कीर्तन कर दे
प्रीत मनुष्य को परब्रह्म कर दे
प्रीत जन्म को प्राकट्य कर दे
प्रीत मृत्यु को अमृत कर दे
प्रीत रस को रसो वै स रास कर दे
"Vibrant Pushti"

कैसे रहे तोरे बिन तेरे यह जगत में
जाना है जबसे नाम तेरा कृष्ण है

पाया है जबसे धाम तेरा गोकुल है

भटक भटक कर कहाँ कहाँ ढूँढा

नही मिला धाम तेरा

नही समझा नाम तेरा

कैसे भी आजा

जताजा नाम तेरा

दिखाजा धाम तेरा

अब तो रहा नहीं जाय

"Vibrant Pushti"

"व्रज"

क्या होता है व्रज में

क्या रहता है व्रज में

स्मरण से कुछ होता है

दर्शन से कुछ होता है

स्पर्श से कुछ होता है

अपलक से कुछ होता है

पलक से कुछ होता है

"Vibrant Pushti"

हे व्रज नार ! हे व्रजेश !

व्रज व्रज व्रजनार - व्रज व्रज व्रजेश

"गम" एक ऐसी असर है, एक ऐसी अवस्था है और एक ऐसा एहसास है जो केवल वो ही पहचान सकते है या अनुभूति कर सकते है जिसे प्रीत की पहचान है, प्रीत में न्योछावर है, प्रीत में समर्पित है।

विरह और गम में अंतर है।

गम में प्रियतम साथ हो तो भी गम की असर होती है। गम में याद, तडप, तीव्रता, जलन और उदासी रहती है। गम कोइ भी प्रकार के मिलन से दूर होता है।

गम का उदभव यादों से होता है,

गम का उदभव इच्छा से होता है,

गम का उदभव अधूरप से होता है,

गम का उदभव असंतोष से होता है,

गम का उदभव अविश्वास से होता है,

गम का उदभव जूठ से होता है,

गम का उदभव धोका से होता है,

गम का उदभव नफरत से होता है,

गम का उदभव गलत सोच से होता है,

गम का उदभव खोने से होता है,

गम का उदभव भूलने से होता है,

गम का उदभव असमंजस से होता है,

गम का उदभव रिश्ता तुटने से होता है।

गम की असर तन, मन और आसपास के परिबळो पर होती है।

गम में सत्य प्रीत की छाया रहती है पर कभी कभी वह छाया सत्य प्रीत के सिवा भी होती है।

गम की असर का समय गम का उदभव पर आधारित है।

गम सदा नहीं रहता है।

"Vibrant Pushti"

जो कभी खिले कभी मुरझे

जो कभी जागे कभी सोये

जो कभी रुठे कभी माने

कभी दौडे कभी रुके

कभी समझे कभी ना समझे

कभी पास कभी दूर

कभी मिले कभी बिछडे

कभी माफी कभी स्वीकार

कभी पुकारे कभी अबोले

कभी सुनाये कभी अनसुना

कैसी है यह रीत जगत की

बार बार तडपाये

"Vibrant Pushti"

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - राधे (द्वितीय)

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" Vibrant Pushti "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "